भारत की राष्ट्रपति,

श्रीमती द्रौपदी मुर्मु

का

राष्ट्रीय महिला आयोग के स्थापना दिवस के अवसर पर संबोधन

नई दिल्ली, **31** जनवरी, **2023**

राष्ट्रीय महिला आयोग के Foundation Day पर आयोजित महिला सशक्तीकरण के इस कार्यक्रम में आकर मुझे बहुत प्रसन्नता हो रही है।

अभी हाल ही में सभी देशवा सयों ने 74वां गणतंत्र दिवस मनाया। मुझे यह देखकर बहुत गर्व हुआ क कर्तव्य पथ पर गणतंत्र दिवस परेड की झां कयों में हमारी 'महिला शक्ति' का अभूतपूर्व प्रदर्शन था। व भन्न राज्यों , सेनाओं तथा अर्धसैनिक बलों की झां कयां, नारी शक्ति के नेतृत्व में, महिला सशक्तीकरण को सम र्पत थी। नारी शक्ति का यह सम्मान एक उभरते हुए नए भारत को दर्शाता है। हमारा यह उद्देश्य होना चाहिए क यह प्रदर्शन केवल एक प्रतीक न हो। बल्कि वास्त वक हो, हर स्तर पर वशेषकर जमीनी-स्तर पर हो, हर क्षेत्र में महिलाओं की बढ़ती भागीदारी और उनके नेतृत्व का ठोस उदाहरण हो।

दे वयो और सज्जनो,

आज हम राष्ट्रीय महिला आयोग का 31वां स्थापना दिवस मना रहे हैं। मेरे मन में एक सवाल है क आ खर हमें महिलाओं के लए ही अलग से एक आयोग बनाने की जरुरत क्यों महसूस हुई? इस सवाल का जवाब अपने आप ही मल जाता है। हम देखते है क हमारी बहनें-बेटियां अंतरिक्ष में उड़ान भर रही है, सैन्य-दलों में नेतृत्व दे रही है तो

दूसरी ओर वे घरेलू हिंसा का शकार हो रही है, और उन्हें workplace में discrimination और harassment का सामना भी करना पड़ता है।

राष्ट्रीय महिला आयोग का मशन है 'महिलाओं के प्रति भेदभाव एवं उन पर अत्याचारों से पैदा हो रही व शष्ट समस्याओं को हल करना और महिलाओं को सक्षम बनाने के लए प्रयास करना।' देश की आधी आबादी के लए एक अलग आयोग बनाने की आवश्यकता यह दर्शाती है क महिला शक्ति को उसका यथो चत सम्मान और अ धकार मलना बाकी है। महिलाओं की स्थिति में सुधार से ही देश समग्र प्रगति कर सकेगा। यह भी देखने में आया है क जिन क्षेत्रों में आरक्षण की व्यवस्था है, वहां पर भी पुरुष ही आगे आ रहे है। आरक्षण का लाभ भी अभी तक महिलाओं तक पूरी तरह नहीं पहुंच पाया है।

महिला शक्ति के बिना एक सशक्त और स्वस्थ समाज की परिकल्पना संभव ही नहीं है। स्त्री को केवल पूजा योग्य मान लेना और कह देना काफी नहीं है। आज **21**वीं सदी में महिलाएं, सार्वजनिक और निजी जीवन में आगे बढ़कर व भन्न क्षेत्रों में उपलब्धियां हा सल कर रही है। हम सबको मलकर एक ऐसा वातावरण बनाने की दिशा में काम करना है जहां सभी महिलाएं सामाजिक-आ र्थक, सांस्कृतिक और राजनीतिक क्षेत्रों में पूरी तरह से भाग ले सकें और अहम योगदान दे सकें।

दे वयो और सज्जनो,

महिला सशक्तीकरण केवल सामाजिक न्याय का मुद्दा नहीं है, यह एक आ र्थक अनिवार्यता भी है। जब महिलाएं सशक्त होती हैं , तो देश आगे बढ़ता है। व भन्न अध्ययनों से यह पता चला है क जब महिलाओं को शक्षा और नौकरी में समान अवसर दिए जाते है, तो उनकी workforce में शा मल होने की संभावना बढ़ जाती है, जिससे देश की अर्थव्यवस्था और मजबूत होती है।

कार्यबल में महिलाओं की कम भागीदारी हमारे देश के सम्पूर्ण वकास में एक बड़ी बाधा है। भारत आज वश्व की पांचवी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है। और अब देश पांच ट्रि लयन डॉलर अर्थव्यवस्था बनने की ओर आगे बढ़ रहा है । इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लए महिलाओं की और अ धक स क्रय भू मका सहायक होगी।

आज भी देश के कई हिस्सों में gender-ratio की स्थिति चंताजनक है। आज **21**वीं सदी के आधुनिक युग में भी लड़का और लड़की में भेद कया जाता है । ऐसा क्यों है? यह हम सबको सोचना है। इस स्थिति को बदलना, केवल सरकार की नहीं, बल्कि पूरे समाज की जिम्मेदारी है । मैं यह भी कहना चाहूंगी क जिस समाज में नारी-शक्ति को सम्मान नहीं मला, उस समाज ने कभी तरक्की नहीं की।

महिलाओं के सशक्तीकरण पर चर्चा करते हुए एक व चत्र paradox या वसंगति पर प्रकाश डालना बहुत जरूरी है। मैंने देखा है क गरीब जनजातीय समाज में**,** महिलाओं को कामकाज में और सभी क्षेत्रों में भागीदारी के समान अवसर मलते हैं। ले कन, आ र्थक रूप से तथा अन्य क्षेत्रों में वक सत इलाकों में**,** महिलाओं की भागीदारी बहुत कम देखी जा रही है। उदाहरण के लए, संघ राज्य क्षेत्र दिल्ली, GDP और per capita income, दोनों दृष्टियों से बहुत आगे है। ले कन, workforce में women participation केवल **15** प्रतिशत है। इसी तरह देश के बहुत श क्षत इलाकों में female foeticide के दुखद उदाहरण भी दिखाई देते हैं। **Gender justice** को सुनिश्चित करते हुए हमें अपने वकास को न्यायपरक बनाना है। हमारा वकास सही अर्थों में वकास तभी कहा जाएगा जब महिलाओं की स्थिति पुरुषों के समान होगी।

इस सन्दर्भ में त मल भाषा के महाक व सुब्रमण्यम भारती की एक क वता याद आती है। उनकी क वता का भावार्थ है क:

यदि तुम अपनी ही दोनों आँखों में से एक आँख को नष्ट करते हो,
तो क्या तुम अपनी देखने की क्षमता को नहीं खराब करते हो?

वास्तव में, यदि महिलाएं और अ धक श क्षत और सक्षम होंगी, तो वश्व-समुदाय और अ धक प्रगतिशील तथा वक सत हो जाएगा, और अनेक वसंगतियों से मुक्त हो जाएगा।

दे वयो और सज्जनो,

भारतीय संस्कृति में महिलाओं को सदैव ही सम्मानपूर्ण स्थान दिया गया है और महिलाएं समाज के सर्वोच्च स्थान पर प्रतिष्ठित रही हैं। आज भी हम लोग देवी दुर्गा, लक्ष्मीज़काली और सरस्वती की पूजा करते हैं। यही नहीं हम गांव में प्रवेश करने से पहले ग्राम देवी को भी नमन करते हैं। यह नारी शक्ति के प्रति आगाध सम्मान का प्रतीक है। नारी को जननी कहा गया है। जननी संतान को जन्म ही नहीं देती , उसका पालन-पोषण भी करती है। जो महिला-शक्ति संतान का पालन-पोषण करती है, वह पूरे समाज, राष्ट्र व वश्व का पालन-पोषण कर सकती है।

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हो रही है क राष्ट्रीय महिला आयोग अपने निरंतर प्रयासों से भारत में gender equality तथा empowerment के लए प्रतिबद्ध है। राष्ट्रीय महिला आयोग द्वारा चलाये जा रहे एक महत्वपूर्ण कार्यक्रम का नाम ही है "She is a Changemaker"। इस कार्यक्रम का उद्देश्य ग्राम पंचायतों से लेकर संसद

तक, सभी स्तरों पर महिला प्रतिनि धयों के लए capacity building कार्यक्रम चलाकर उन्हें सशक्त और प्रभावी नेतृत्व देने में मदद करना है। मैं इन प्रयासों के लए राष्ट्रीय महिला आयोग और महिला एवं बाल वकास मंत्रालय की पूरी टीम की सराहना करती हूं और उन्हें बधाई देती हूं।

मैं सभी महिलाओं से अनुरोध करती हूं क आप हर प्रकार की बाधाओं को पार करते हुए दृढ़ संकल्प के साथ आगे बढ़ें। आप सब अपने अ धकारों के प्रति जागरूक रहें तथा दूसरी महिलाओं को भी जागरूक बनाएं। मेरा मानना है क महिलाएं जब स्वयं आगे बढेंगी, तभी वे समाज और देश को प्रगति की नई राह पर ले जाएंगी। अंत में, राष्ट्रीय महिला आयोग को, 'सशक्त महिला, सशक्त भारत' बनाने के प्रयासों के लए मैं शुभकामनाएं देती हूं।

धन्यवाद,

जय हिन्द!

जय भारत!